आभार : डा. देश दीपक.

kissekahani.com

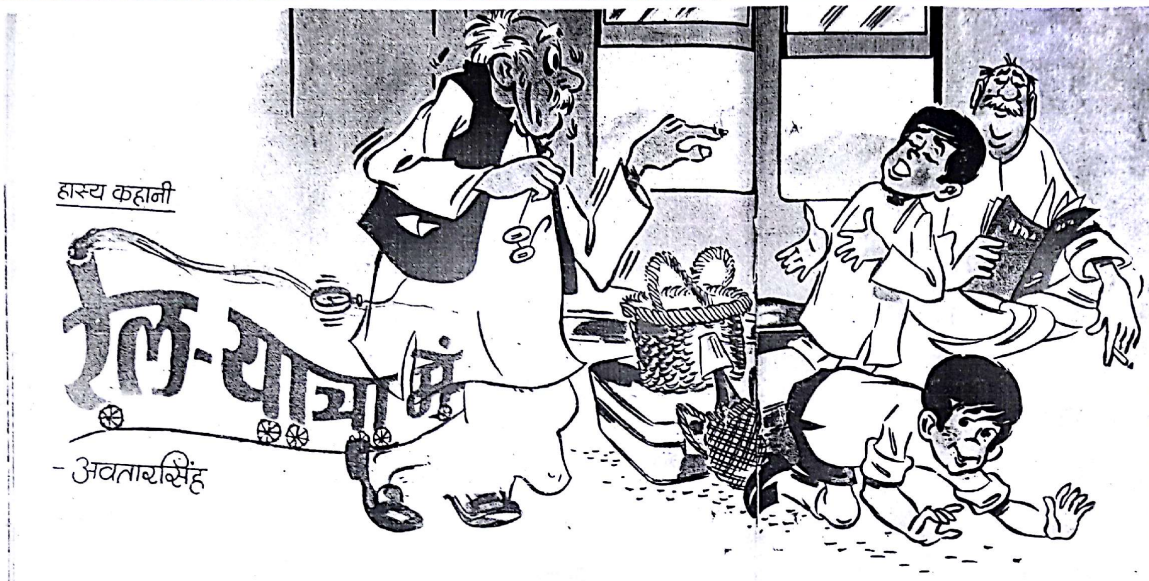

हास्य कहानी

रेल-यात्रा

– अवतारसिंह

डैडीकी छुट्टी दफ्तरसे मंजूर नहीं हुई। तय हुआ कि इस बार दादाजी ही बच्चोंको गर्मीकी छुट्टियोंमें उनके मामाजीके यहां गांव ले जाएंगे।

रेलका सफर, बच्चोंका साथ। दादाजी साफ मुकर गए कि मैं तो इन शैतानोंको नहीं ले जा सकता।

पर, फिर उन्होंने सोचा कि गांवमें बच्चों-पर उनका एकमात्र अधिकार होगा। घरमें मम्मी और डैडीकी उपस्थितिका खयाल बच्चोंको झिड़कते हुए दादाजीको एक सीमामें बांधे रखता है। पर, गांवमें वह होंगे और बच्चे; आनंद आ जाएगा।

दादाजीके दिलमें यह धड़का भी समाया हुआ था कि कहीं सफरमें बच्चे बगावत न कर बैठें, इसलिए डैडीसे बोले, "भई रामलाल, ले तो इन्हें जाऊंगा, पर रेलमें जो भला-बुरा मैं कहूं, इन्हें एकदम मानना पड़ेगा फौरन। बैलाग बात कहता हूं—रेल शैतानका चर्खा है; यदि इन्होंने मन-मानी चलाई और तीनके बदले दो लौटे, तो दोष मुझे मत देना।"

बस डैडीने बच्चोंके नाम सफरमें दादाजीकी प्रत्येक आज्ञा माननेका कड़ा आर्डर जारी कर दिया।

आखिर वह शुभ दिन आया। रेल सुबह सात बजे छूटती थी। दादाजी चार बजेसे ही सफेद चिट्टा धोती-कुर्ता पहनकर सज गए और शोर मचाने लगे कि अब देर किस बातकी है; स्टेशन क्यों नहीं चलते?

सवा छह बजे डैडी टैक्सी लाए। सब स्टेशन पहुंचे।

डैडीने सैकंड क्लासके टिकट ले दिए ताकि भीड़ वगैराकी परेशानी न हो।

गाड़ी चली। बच्चोंने खिड़कीमेंसे रूमाल हिलाए। धीरे धीरे मम्मी और डैडी नजरोंसे ओझल हो गए। तीनों खिड़कीके पासवाली सीटोंपर बैठ गए।

तीन पुरुषों और दो स्त्रियोंको छोड़कर पूरे डिब्बेमें कोई न था। दादाजीका इस समय बच्चोंपर एकच्छत्र राज था। जैसे चुनावसे पहले पार्टियां 'सब बंद' आंदोलन चलाकर अपनी शक्ति परखती हैं, उसी तरह उन्होंने सोचा कि क्यों न शुरूमें ही आजमा लिया जाए कि बच्चे उनका कितना कहना मानते हैं। वह बोले, "अरे, ओ राजू, मुन्नू, पिंकी! यह क्या कर रहे हो?"

"क्या?" तीनों चौंके। वे रेलसे बाहर पीछे-को दौड़ते पेड़-पौधे देखनेके सिवाय और कुछ नहीं कर रहे थे।

"अरे भई! तुम लोग खिड़कीके पास बैठे हो। इंजनसे कोई कोयलेका टुकड़ा आंखोंमें आ गिरेगा, तो?"

तीनों बच्चे ठगे-से सोचते रह गए। इंजन कमसे कम आधा फर्लांग दूर था। यूं भी उनकी यह पहली रेल-यात्रा न थी। हर वर्ष मम्मी और डैडीके साथ गांव जाते हैं। खिड़कीके पास बैठना वे अपना जन्म-सिद्ध अधिकार मानते हैं। बड़े तो दुनिया देख चुके हैं। खिड़कियोंके पास वाली सीटें स्पेशल बच्चोंके लिए बनाई गई हैं ताकि वे भी दुनियाकी जानकारी प्राप्त कर सकें।

"मेरा मुंह क्या देख रहे हो? बीचवाली लंबी सीटपर बैठ जाओ," दादाजी पूरे जोरसे गरजे।

बच्चे सहम गए। दो यात्री सो रहे थे, वे जग गए। जो जाग रहे थे, कांप गए। छतसे लटका बिजलीका पंखा करीब आधा चक्कर काट गया। दादाजीने स्वयं अनुभव किया कि उन्हें इतना तेज नहीं बोलना चाहिए था, पर तोपका गोला और मुंहका बोला कहीं वापस आए हैं! और बच्चे, वे बेचारे कभीके बीचवाली सीटपर आ गए थे।

तीनोंने समय बितानेका पूरा इंतजाम कर रखा था। दूरदर्शी थे। राजूने जेबसे ताश निकाले और तीन-दो-पांच शुरू हो गया।

दादाजी डिब्बेमें इधर-उधर टहलने लगे। बच्चोंका ताश खेलना उन्हें काफी अखर रहा था, पर चुप्पी लगा गए। अब वह 'यात्रियोंके लिए निर्देश' पढ़ने लगे। कम्बख्त रेलवेवालोंने कहीं नहीं लिखा था कि डिब्बेमें ताश खेलना मना है।

तभी मुन्नू और पिंकी झगड़ने लगे। मुन्नूको उससे तीन पत्ते खींचने थे। वह कहती थी मेरे हाथ दो ही कम थे। राजूके हाथ पूरे थे, सो मुन्नू-को दो पत्ते खींचने होंगे।

दादाजी तेज कदमोंसे उन तक पहुंचे और पास आकर बोले, "सुनो, ताश इधर लाओ, सारेके सारे।"

बच्चोंने चुपचाप पूरे ताश उन्हें पकड़ा दिए। अब दादाजीको यह नागवार गुजरा कि बच्चोंने कारण पूछे बिना बड़े प्रेमसे ताश उनके हवाले कर दिए। एक कोनेकी ओर इशारा करते हुए वह बोले, "तुम्हारे शोरसे वह भाई साहब जग गए हैं!"

तभी उनके 'वह भाई साहब' बोल उठे, "बच्चोंको खेलने दीजिए, साहब, हमें तो आपकी भीषण गर्जनासे पहले ही जगा दिया था। मैं तो समझा डिब्बे पर बिजली गिरी है!"

सब हंसने लगे। दादाजी लाल लाल आंखों-से उस आदमीको पी जानेकी असफल कोशिश करने लगे।

नई दिल्लीसे चलकर अभी पहला स्टेशन भी नहीं आया था। पिंकीने हिसाब लगाकर राजू

Scanned by CamScanner

और मुन्नूको बताया कि यदि एक स्टेशनसे दूसरे स्टेशन तक गाड़ी पहुंचनेके बीच दादाजी कुल दो बार भी झिड़कें, तो भी गांव पहुंचने तक वह हमें ५६ बार झिड़क चुके होंगे।

बस तीनोंने कमर कस ली।

इधर दादाजीने देखा कि बच्चे शांत बैठे एक दूसरेका मुंह देख रहे हैं, तो संतुष्ट होकर वह खिड़कीके साथवाली सीटपर बैठ गए। ठंडी-ठंडी हवा लग रही थी। गर्मियोंके दिन। खिड़कीसे सिर टिकाकर वह ऊंघने लगे और फिर सो गए।

अचानक घबराए हुए राजूने उन्हें जगाया और बोला, "दादाजी, दादाजी! पिंकी स्टेशनपर ही रह गई।"

बताओ तो जानें

बच्चों, नीचे भारतके कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियोंके नाम तथा सामने उनके नामोंके पहले लगनेवाले विशेषण दिए गए हैं। क्या तुम इन नामोंके पूर्व उनके सही विशेषण लगा सकते हो? यदि सही उत्तर बतानेमें कठिनाई महसूस हो, तो पृष्ठको उल्टा करके सही जानकारी प्राप्त कर लो।

(१) विद्यापति . . . . . .राष्ट्रकवि
(२) रवीन्द्रनाथ ठाकुर . . . . . .भारतेन्दु
(३) श्रीरामचंद्र. . . . . .सन्त शिरोमणि
(४) तेनसिंह नोर्के . . . . . देशबन्धु
(५) चित्तरंजनदास . . . . मैथिल कोकिल
(६) महात्मा बुद्ध . . . . मर्यादा पुरुषोत्तम
(७) गुरु गोविन्द सिंह . . . . . शाक्य मुनि
(८) बाबू हरिश्चन्द्र. . . . . .विश्वकवि
(९) मैथिलीशरण गुप्त. . . . . .हिमसम्राट्
(१०) तुलसीदास . . . . . दशमेश

—आर. के. सी.

उत्तर

(१) कवि कोकिल, (२) विद्यापति, (३) मर्यादा पुरुषोत्तम, (४) हिमसम्राट, (५) देशबन्धु, (६) शाक्य मुनि, (७) दशमेश गुरु, (८) राष्ट्रकवि, (९) भारतेन्दु, (१०) सन्त शिरोमणि।

"क्या?" दादाजीकी नींद हवा हो गई। पूछा, "स्टेशनपर किसलिए उतरी थी?"

"पानी पीने।"

"मुझसे बिना पूछे गई थी न! मेरे माथेपर काला टीका जो लगाना था। स्टेशन कितना पीछे छूट गया?" दादाजीका स्वर भर्रा गया।

"अभी तो गाड़ी दो-तीन फर्लांग भी नहीं चली।"

"जंजीर खींच दो।"

राजूने जंजीरकी ओर हाथ बढ़ाया। पर यूं घबराकर पीछे हटा जैसे वहां कोई बिच्छू बैठा हो। बोला, "दादाजी, यहां तो लिखा है कि केवल उस दशामें जंजीर खींची जा सकती है, जब किसीके प्राण संकटमें हों या पचास रुपयेसे अधिकका सामान गिर गया हो। पिंकीका मूल्य पचास रुपये तो क्या होगा?"

"बेवकूफ! उसके प्राण संकटमें जो हैं।"

"आप नाहक घबराते हैं, दादाजी, वह बड़ी चंट है। देख लेना, आठ बजे वाली 'डाक गाड़ी' पकड़कर हमसे पहले गांव पहुंच जाएगी।"

"नालायक, बकता जाएगा..." इस समय दादाजीके हाथ-पांव फूले हुए थे। उन्होंने स्वयं जंजीरकी ओर हाथ बढ़ाया कि राजूने उनका हाथ रोक लिया और बोला, "दादाजी, जरा सोचए तो। हो सकता है यह ट्रेन हमारे जवानोंके लिए गोला-बारूद या रसद ले जा रही हो, इसी ट्रेनसे कोई डाक्टर मरीज देखने जा रहा हो या कोई नेता किसी अकाल-पीड़ित प्रदेशका दौरा करने आ रहा हो; यदि आप केवल पिंकीके लिए जंजीर खींचेंगे, तो वे सब लेट हो जाएंगे।"

राजूका यह लच्छेदार भाषण सुनकर मुन्नूकी हंसी छूट गई। वह बड़ी सफाईसे हंसीको रोनेमें बदल गया और सुबकने लगा, "पिंकी...पिंकी!"

दादाजी मुन्नूकी हंसी सुन चुके थे। कुछ बच्चोंका हंसना और रोना एक जैसा होता है। दादाजी ऐसे कोरे बुद्धू न थे, झट किसी षड्यंत्रकी गंध पा गए। जंजीरका ध्यान छोड़कर सीटोंके नीचे, बक्सोंके पीछे पिंकीको ढूंढ़ने लगे। एक स्त्रीने सहानुभूति दिखाई, पूछा, "क्या गुम गया है, बाबाजी?"

"कुछ नहीं, बहनजी। एक छोटी-सी बच्ची थी। यहीं कहीं गिरी है," पीछेसे राजूने पूरी गंभीरतासे जवाब दिया। वह स्त्री और साथ बैठा

उसका पति हंसने लगे।

दादाजी झल्लाकर अपनी सीटपर वापस बैठ गए। राजूने बड़े प्रेमसे पूछा, "दादाजी, जंजीर खींच दूं?"

"तू पहले मेरी गर्दन खींच दे," दादाजी उसपर बरसे, फिर कुछ सोचकर बाथरूमकी ओर गए, पर पिंकी वहां भी नहीं थी।

तभी मुन्नू सुबकते हुए बोला, "ऊंऊं. . . . . पिंकी कह रही थी. . . . ऊंऊं. . . मैं दूसरे डिब्बेमें बैठूंगी. . . दादाजी खिड़कीके पास बैठने नहीं देते।"

"वह दूसरे डिब्बेमें बैठ गई होगी। स्टेशनपर तो कहीं दीख नहीं रही थी," राजूने उसका एकदम समर्थन किया।

दादाजीकी रोनी सूरत देखकर मुन्नूको हंसी आने लगी। वह और जोरसे रोने लगा। राजूने उसे समझाया, "रो मत, मुन्नू. . . रो मत, मेरे अच्छे भैया. . . गाड़ी रुकने तो दे, दादाजी अभी पिंकीको मंगा देंगे।"

"मैं क्या उसे हवामेंसे पकड़ लाऊंगा?" दादाजी चीखे। समझ गए थे कि पिंकी है इसी डिब्बेमें ही। पर जब तक कि अपनी आंखोंसे वह उसे देख न लें, उन्हें विश्वास कैसे आए। घुटने टेकते हुए उन्होंने राजूसे कहा, "राजू भई, क्यों परेशान करते हो। कहां है पिंकी?"

"दादाजी, पिंकी है इसी ट्रेनमें ही। वह कहती है कि जब तक मेरी दो मांगें स्वीकार नहीं हो जातीं, मैं इस डिब्बेमें नहीं आऊंगी।"

"तो वह हमारे सामने आकर अपनी मांगें रखे," दादाजीने नया पासा फेंका, पर बच्चे उनके भी गुरु थे।

"दरअसल उन्हें अपना निर्णय बहुत जल्दीमें लेना पड़ा। जानेसे पहले वह हमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर गई..." राजू इतने आदरसे बोला जैसे पिंकी प्रधान मंत्री हो और वह उसका सेक्रेटरी।

"कौन-सी मांगें हैं? जरा सुनूं तो।"

"खिड़कीके साथ वाली सीटपर बैठनेकी अनुमति और जब जी चाहे ताश खेलना।"

दादाजी एकदम उनकी बात स्वीकार कर लें, तो दादाजी ही किस बातके। इस बातको भूलकर कि पिंकी डिब्बेमें नहीं है वह बोले, "भई, मुझे सोचनेका समय दो।"

नई दौड़ की तैयारी

तन्मयता से पढ़ीं पुस्तकें,
हमने खूब पढ़ाई की;
तेज परीक्षा के घोड़ों पर
हमने खूब चढ़ाई की!
लंबी-चौड़ी दौड़ लगाई,
लेकिन कभी न हम हारे,
थककर चूर हुए सब घोड़े,
हांफ गए थे बेचारे!
जो भी दौड़ लगाई हमने,
वह अपने अनुकूल रही;
ढंग हमारा गलत नहीं था,
हम थे बिलकुल सही सही।
छाया है उल्लास अनूठा,
नई विजय हमने पाई,
लो, गर्मी अब तेज हो गई,
इधर छुट्टियां भी आईं!
फिर आगामी नई दौड़ के
लिए करेंगे तैयारी;
एक वर्ष के बाद इन दिनों—
आएगी अपनी बारी!

—जगदीशचन्द्र शर्मा

"सोचिए, पर जानेसे पहले वह कह गई थीं कि यदि उनकी मांगों पर ध्यान न दिया गया, तो सोनीपत स्टेशनपर उतरकर वह चुपकेसे घरकी गाड़ी पकड़ लेंगी। ...और सोनीपत कुल दो-तीन मील दूर है!"

"अच्छा, मान लेता हूं। तुम लोग खिड़कीके पास बैठ सकते हो, पर हाथ बाहर मत निकालना। ताश खेल सकते हो, पर अधिक शोर मत मचाना। दादाजीने सरकारकी भांति शर्तें लगाकर उनकी मांगें स्वीकार कीं और अपनी लाज रखी। फिर बोले, "अब उसे बुला तो दो। दंगोंकी जड़..."

तभी धम्मसे कोई चीज ऊपर सामान रखनेके तख्तेसे दादाजीके सामने गिरी। वह चौंके। पिंकी हंसती हुई उनके सामने खड़ी थी। उसने जोरसे कहा, "दादाजी!" "जिन्दाबाद!", बच्चोंने नारा लगाया और तीनों खिड़कियोंके साथ वाली सीटोंपर बैठ गए।

Scanned by CamScanner